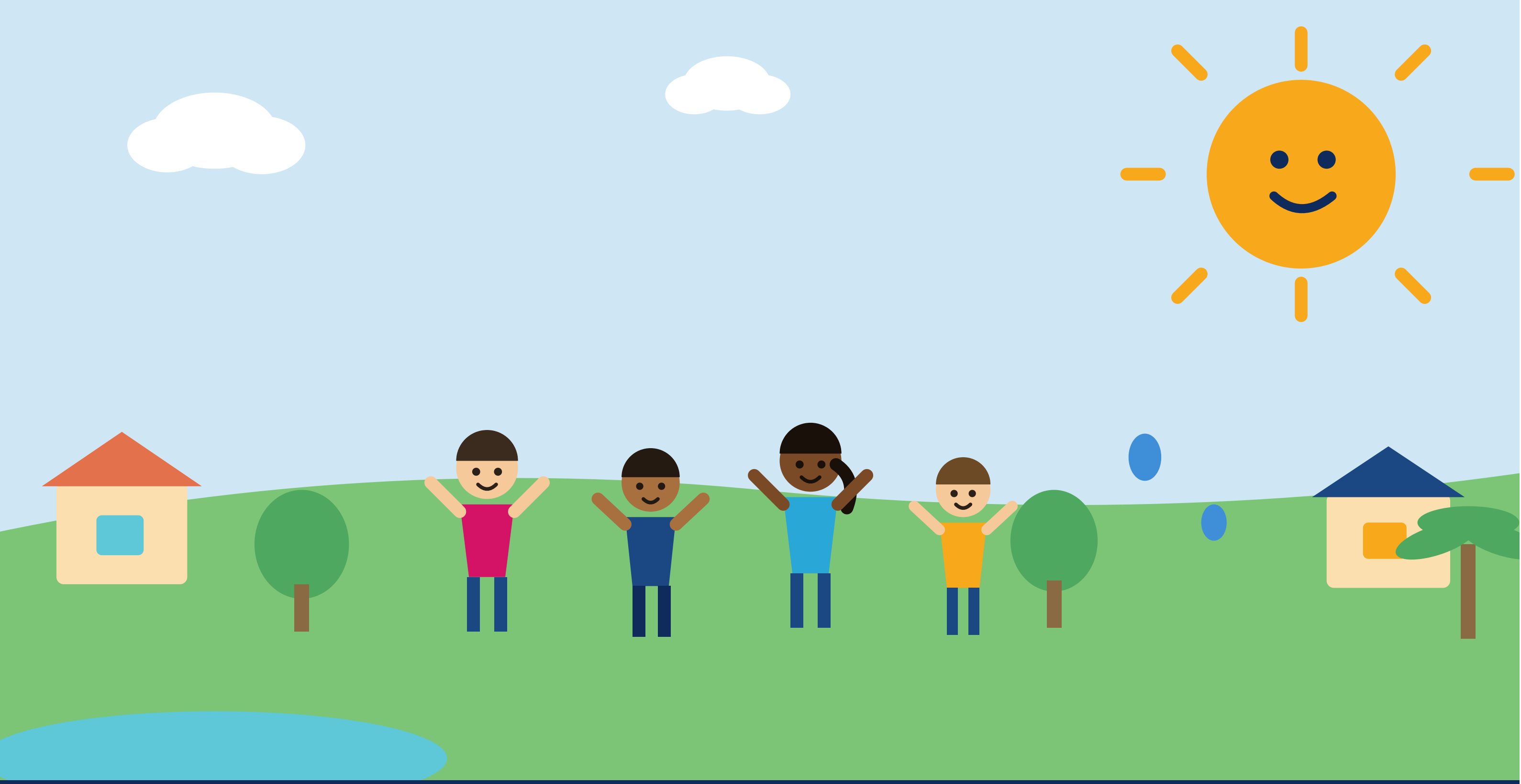

रोटरी पीस फ़ेलोशिप की एक सामाजिक बदलाव पहल

जलवायु, बच्चे और शांति
नॉलेज ब्रीफ़

भारत और मध्य पूर्व तथा उत्तरी अफ़्रीका में जलवायु ख़तरे बच्चों और युवाओं को कैसे प्रभावित करते हैं, और शांति-निर्माण के नज़रिए से देखने पर उन जोखिमों में क्या बदल जाता है, इस पर प्रमाण।

क्लाइमेट एक्शन हीरोज़ • **CLIMATEACTIONHEROES.ORG**

सितंबर 2026 | भारत और मध्य पूर्व | बच्चा-केंद्रित शांति-निर्माण | हर जगह प्रमाण श्रेणीबद्ध

साथ में आने वाली सामग्री। क्लाइमेट चैंपियंस: बच्चों की हैंडबुक (10 से 18 वर्ष) और फ़ैसिलिटेटर गाइड, जो रोटरैक्ट सदस्यों, एनजीओ, शिक्षकों, युवा कार्यकर्ताओं और सामुदायिक फ़ैसिलिटेटरों के लिए है। दोनों स्थानीय अनुकूलन और अनुवाद के लिए बनाए गए हैं।

यहाँ की तुलना जानबूझकर सावधान है। मध्य पूर्व और उत्तरी अफ़्रीका को एक समान संदर्भ नहीं माना गया है, और संघर्ष से प्रभावित देशों के प्रमाण को भारत के साथ एक ही सपाट पैमाने पर नहीं रखा गया है। जलवायु दबाव को एक ऐसे कारक के रूप में देखा गया है जो पहले से तनावग्रस्त व्यवस्थाओं पर और बोझ डाल सकता है; इसे संघर्ष का सीधा कारण नहीं माना गया है।

निष्कर्षों से पहले

दायरा और तरीक़ा

यह ब्रीफ़ बच्चों पर जलवायु जोखिम, स्वास्थ्य, शिक्षा, विस्थापन, युवा भागीदारी और जलवायु–शांति के रास्तों पर प्रकाशित शोध तथा संस्थागत रिपोर्टों पर आधारित है। दावों की स्रोतों के बीच जाँच की गई ताकि मॉडल-आधारित जोखिम-संपर्क, अवलोकन आधारित संबंध, परामर्श के निष्कर्ष और कार्यक्रम-प्रमाण एक जैसे न माने जाएँ। इसमें दिल्ली की सामुदायिक बैठकों से मिली सहभागी क्षेत्रीय सीख और साथ की दोनों हैंडबुक के डिज़ाइन का तर्क भी शामिल है।

प्रमाण को उसी नाम से दर्ज किया गया है जो वह वास्तव में दिखाता है। मॉडल-आधारित जोखिम-संपर्क को मापी गई हानि की तरह पेश नहीं किया गया। अवलोकन अध्ययनों के संबंधों को कारण-प्रभाव की तरह नहीं लिखा गया। परामर्श के निष्कर्षों को बताई गई धारणाओं के रूप में लिया गया। कार्यक्रम मूल्यांकनों को संभव व्यवहार के उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया गया, उनकी सीमाएँ दिखाते हुए। यह जलवायु–संघर्ष वाले हिस्से में सबसे अधिक मायने रखता है, जहाँ निश्चयात्मक भाषा प्रमाण से आगे निकल जाती।

जोखिम-संपर्क और जोखिम एक नहीं हैं। यूनिसेफ़ का 2026 का बाल जलवायु जोखिम ढाँचा एक महत्वपूर्ण भेद करता है। कोई बच्चा कई ख़तरों वाले इलाक़े में रह सकता है, पर परिणाम स्वास्थ्य, पोषण, पानी और स्वच्छता, शिक्षा, संरक्षण, सामाजिक सुरक्षा और स्थानीय सेवाओं की भरोसेमंदी पर भी निर्भर करता है। इस ब्रीफ़ के मुख्य आँकड़े मॉडल-आधारित अनुमान हैं। वे बताते हैं कि संयुक्त जोखिम के नीचे कौन रहता है, यह नहीं कि किसे वही चिकित्सकीय या विकासात्मक हानि हुई है।

भौगोलिक टिप्पणी। देश-विशेष प्रमाण का नाम लिया गया है, उसे पूरे क्षेत्र पर सामान्य नहीं किया गया। तुर्किये को, जहाँ कोई अध्ययन प्रासंगिक हो, क्षेत्र से सटा हुआ माना गया है, क्षेत्र का हिस्सा नहीं। सोमालिया, गाम्बिया और माली केवल तुलनात्मक पर्यावरणीय शांति-निर्माण के उदाहरणों के रूप में आते हैं।

छोटा रूप

सारांश

बच्चे जलवायु परिवर्तन को रोज़मर्रा की परिस्थितियों से अनुभव करते हैं: गर्मी, पानी की उपलब्धता, भोजन, हवा की गुणवत्ता, स्कूल का चलते रहना, घर की आमदनी, आवाजाही और सुरक्षा। यूनिसेफ़ का 2026 का ढाँचा जोखिम-संपर्क और जोखिम के बीच अहम भेद करता है। कोई बच्चा कई ख़तरों वाले इलाक़े में रह सकता है, पर परिणाम स्वास्थ्य, पोषण, पानी और स्वच्छता, शिक्षा, संरक्षण, सामाजिक सुरक्षा और स्थानीय सेवाओं की भरोसेमंदी पर भी निर्भर करता है।

भारत

भारत में जोखिम-संपर्क का पैमाना बड़ा है। यूनिसेफ़ से जुड़े 2026 के एक विश्लेषण का अनुमान है कि भारत के 97% बच्चे कम से कम दो परस्पर ओवरलैप करते जलवायु या आपदा ख़तरों के संपर्क में हैं और 23.4 करोड़ से अधिक तीन या उससे अधिक के संपर्क में हैं। ये मॉडल-आधारित अनुमान हैं, उन बच्चों की गिनती नहीं जिन्हें वही चिकित्सकीय या विकासात्मक हानि हुई हो। स्थानीय निगरानी ब्योरा जोड़ती है: दिल्ली, गांधीनगर, खड़गपुर और रुड़की के आरंभिक बाल्यावस्था केंद्रों पर 2024 के एक अध्ययन ने उन जगहों पर गंभीर ताप-दबाव और कण-प्रदूषण दर्ज किया जहाँ छोटे बच्चे रहते हैं, साथ ही चेताया कि उन स्थानों को राष्ट्रीय औसत न माना जाए।

मध्य पूर्व और उत्तरी अफ़्रीका

पूरे क्षेत्र में यूनिसेफ़ का अनुमान है कि 8.2 करोड़ से अधिक बच्चे उच्च या अत्यधिक उच्च जलवायु जोखिम में हैं। यह क्षेत्रीय आँकड़ा बहुत अलग-अलग राष्ट्रीय हक़ीक़तों को ढक देता है। कुछ देशों में जल-दबाव, गर्मी, प्रदूषण, विस्थापन, ऊर्जा असुरक्षा और संघर्ष से टूटी सेवाएँ एक साथ आती हैं; अन्यत्र वही ख़तरे अधिक मज़बूत संस्थागत ढाँचे में घटित होते हैं। यमन से हाल के परामर्श आँकड़े दिखाते हैं कि संदर्भ क्यों मायने रखता है: उत्तरदाताओं ने प्राकृतिक संसाधनों तक घटती पहुँच और पर्यावरणीय दबाव के साथ स्थानीय तनाव भी बताए, पर ये निष्कर्ष संघर्ष-प्रभावित माहौल में धारणाएँ मापते हैं और यह सिद्ध नहीं करते कि जलवायु परिवर्तन ने हिंसा पैदा की।

शांति-निर्माण वाला सवाल

इसलिए शांति-निर्माण का सवाल रास्तों और संस्थाओं का सवाल है। जब आजीविका असुरक्षित हो, सेवाएँ कमज़ोर हों, लोग विस्थापित हों या ज़मीन और पानी तक पहुँच पर विवाद हो, तब जलवायु दबाव मौजूदा दबावों को सँभालना कठिन बना सकता है। साथ ही, पर्यावरणीय समस्याएँ समूहों के लिए बातचीत करने, जानकारी साझा करने और मिलकर संसाधन सँभालने की व्यावहारिक वजहें भी बना सकती हैं। युवा-केंद्रित पीसबिल्डिंग फ़ंड परियोजनाओं के प्रमाण इस दूसरे रास्ते के उदाहरण दिखाते हैं, हालाँकि अधिकांश प्रमाण गुणात्मक और परियोजना-विशिष्ट हैं।

इस कहानी में युवा केवल असुरक्षित प्राप्तकर्ता के रूप में नहीं आने चाहिए। सेव द चिल्ड्रेन के दस क्षेत्रीय संदर्भों में हुए सहभागी शोध ने पाया कि बच्चों और युवाओं के पास जलवायु निर्णय-प्रक्रिया तक पहुँचने के रास्ते अक्सर सीमित होते हैं, और जब भागीदारी प्रभाव के बजाय आयोजनों तक सिमट जाती है तो वह दिखावटी हो सकती है।

खंड 3

दो रास्ते, और कोई भी अपने आप क्यों नहीं होता

प्रमाण जलवायु परिवर्तन से सीधे संघर्ष तक की रेखा का समर्थन नहीं करते। जलवायु ख़तरे संसाधनों और सेवाओं को प्रभावित करते हैं; फिर वे प्रभाव राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों से होकर गुज़रते हैं। वही सूखा एक जगह सोख लिया जाता है और दूसरी जगह अस्थिर कर देता है, क्योंकि संस्थाएँ, सुरक्षा-जाल, संसाधन-नियम और पुरानी शिकायतें अलग होती हैं।

«जोखिम बढ़ाने वाला कारक» सही वाक्यांश है, सावधानी से इस्तेमाल किया जाए। इसका अर्थ है कि जलवायु दबाव पहले से मौजूद दबावों को तेज़ कर सकता है। इसका अर्थ यह नहीं कि जलवायु परिवर्तन यंत्रवत हिंसा पैदा करता है। फोल्के बर्नाडोट अकादमी, यूएनडीपी और सिपरी का मार्गदर्शन यही बात कहता है और पूछता है कि संसाधनों तक किसकी पहुँच है, निर्णय कौन लेता है, और युवाओं को कैसे शामिल किया जाता है।

यमन: महसूस किए गए संबंध, युद्ध में घिरे देश में

यूरोपियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ पीस और वेदरिंग रिस्क के नेतृत्व में 2026 के एक परामर्श ने यमन के 13 गवर्नरेट में 3,694 लोगों से बात की। दस में से सात ने रोज़मर्रा की ज़िंदगी पर कम से कम मध्यम जलवायु प्रभाव बताया। 92% ने प्राकृतिक संसाधनों, ख़ासकर पानी, गैस और ईंधन तक घटती पहुँच महसूस की। आधे से अधिक ने ऐसे स्थानीय तनाव बताए जिन्हें वे पर्यावरणीय कारकों से जोड़ते थे, और 57% ने कहा कि पर्यावरणीय चुनौतियाँ शांति वार्ता का हिस्सा होनी चाहिए।

> **इसे वही समझें जो यह है।** ये लंबे संघर्ष से प्रभावित देश के परामर्श निष्कर्ष हैं। ये दिखाते हैं कि लोग पर्यावरणीय दबाव और असुरक्षा के ओवरलैप को कैसे देखते हैं। ये जलवायु परिवर्तन को उस संघर्ष का कारण सिद्ध नहीं करते, और किसी फ़ैसिलिटेटर को इन्हें कभी वैसे पेश नहीं करना चाहिए।

मध्यस्थता पर साथ का एक व्यवहार-नोट एक बात जोड़ता है जो निष्पक्षता पर किसी भी सत्र में काम आएगी: जलवायु अनुकूलन राजनीतिक है, क्योंकि यह बदलता है कि पहुँच किसे मिलेगी और लागत कौन उठाएगा। ख़राब ढंग से बनाया गया अनुकूलन शिकायतों को गहरा कर सकता है। वॉटर टैंक गतिविधि बच्चों को ठीक इसी के भीतर खड़ा करती है।

खंड 2

दो क्षेत्र, और उन्हें मिला देने का लालच

तुलना तभी अपनी जगह बनाती है जब वह साझा दबावों को पहचाने और संस्थागत तथा भौगोलिक भेद को बनाए रखे। नीचे इस ब्रीफ़ में इस्तेमाल हुए प्रमाण का सार है। यह इस बात की क्रमसूची नहीं है कि कौन-सा क्षेत्र बदतर है, और इसे कभी वैसे इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

क्षेत्र	भारत	मध्य पूर्व और उत्तरी अफ़्रीका
गर्मी और पढ़ाई	बड़ी आबादी का जोखिम-संपर्क; गर्मी से स्कूल के समय में बदलाव और बंदी; कुछ शहरों में विस्तृत स्थानीय निगरानी।	अत्यधिक गर्मी पानी की कमी, बिजली की भरोसेमंदी और आवास से जुड़ती है। प्रभाव देशों के बीच तीखे ढंग से अलग हैं।
पानी और भोजन	सूखा, वर्षा की अनिश्चितता, बाढ़ से संदूषण और खेती पर निर्भरता स्थानीय बाल-स्वास्थ्य और आजीविका जोखिम बनाते हैं।	कई देशों में बहुत ऊँचा आधारभूत जल-दबाव; कुछ जगहों पर संघर्ष और टूटा बुनियादी ढाँचा और अड़चन जोड़ते हैं।
हवा की गुणवत्ता	कई शहरी इलाक़ों में परिवहन, उद्योग, धूल, बायोमास और मौसमी जलाने से ऊँचा कण-संपर्क।	क्षेत्र के कुछ हिस्सों में धूल-भरी आँधियाँ, यातायात और उद्योग के साथ, मायने रखती हैं। देश-स्तरीय प्रमाण चाहिए।
शिक्षा	गर्मी और चरम मौसम स्कूल के कार्यक्रम तोड़ते हैं; पैमाना राष्ट्रीय और राज्य रिपोर्टों में दिखता है।	जलवायु ख़तरे विस्थापन, ऊर्जा की कमी और संघर्ष से जुड़ी सेवा-बाधा के साथ मिल सकते हैं।
युवा भागीदारी	स्थानीय बाल परिषदें और सामुदायिक भागीदारी; राष्ट्रीय व्यवस्थाओं की देश-दर-देश पुष्टि ज़रूरी।	कई देशों में अनौपचारिक युवा कार्रवाई और अधिक औपचारिक भागीदारी, दोनों दर्ज हैं।

वह रेखा जो फ़ैसिलिटेटर को थामनी है। भारत में पढ़ाई मुख्यतः गर्मी से बाधित होती है, और विस्थापन आमतौर पर आपदा से होता है और कम अवधि का होता है। मध्य पूर्व और उत्तरी अफ़्रीका में विस्थापन कहीं अधिक बार वर्षों से चले आ रहे संघर्ष से जुड़ा है, और धूल तथा रेत की आँधियाँ हवा में वह चीज़ डालती हैं जो किसी ने पैदा नहीं की। संघर्ष-प्रभावित यमन पूरे क्षेत्र का प्रतिनिधि उतना ही नहीं हो सकता जितना उत्तर भारत के चार शहर पूरे भारत के।

खंड 1

बचपन जोखिम का समीकरण क्यों बदल देता है

बच्चों के शरीर गर्मी को वयस्कों से अलग ढंग से सँभालते हैं, और छोटे बच्चे पानी, भोजन, स्वास्थ्य देखभाल, परिवहन, पढ़ाई और संरक्षण के लिए वयस्कों तथा सार्वजनिक सेवाओं पर निर्भर होते हैं। इसलिए जब बुनियादी सेवाएँ पहले से ही भरोसेमंद न हों, तब जलवायु ख़तरा और गंभीर हो जाता है। यूनिसेफ़ का 2026 का ढाँचा इस अंतर्क्रिया को केंद्र में रखता है: जलवायु जोखिम में जोखिम-संपर्क, बच्चों की विशेष संवेदनशीलता और सेवाओं की कमियाँ मिलकर काम करती हैं।

यह नज़रिया असमानता की समझ भी बदलता है। दो बच्चे एक ही गर्म दिन का सामना कर सकते हैं और उनका जोखिम बहुत अलग हो सकता है। एक के पास छाया, भरोसेमंद पानी, ठंडी कक्षा और देखभाल तक तेज़ पहुँच हो सकती है; दूसरा अधिक दूर चलता हो, ख़राब हवादार घर में रहता हो, तापमान बढ़ने पर स्कूल छोड़ता हो, या सूखे से प्रभावित घरेलू आमदनी पर निर्भर हो। ख़तरा साझा है, पर उसे झेलने की क्षमता नहीं।

गर्मी और स्वास्थ्य

अत्यधिक गर्मी दोनों क्षेत्रों के बीच सबसे स्पष्ट मिलन-बिंदु है। भारत में राज्य स्तर की लू ने स्कूल के घंटे बदले, छुट्टियाँ पहले कीं और स्कूल पूरी तरह बंद कराए। ICLEI दक्षिण एशिया का अध्ययन बच्चों के पैमाने पर माप जोड़ता है, जिसमें 55°C तक पहुँचते ताप-सूचकांक और 25°C से 32°C के बीच वेट-बल्ब तापमान शामिल हैं, जो उन्हीं जगहों के भीतर लिए गए जिन्हें बच्चे सचमुच इस्तेमाल करते हैं। मध्य पूर्व और उत्तरी अफ़्रीका में गर्मी का जोखिम बाहर के तापमान से कहीं अधिक से तय होता है: घरेलू ऊर्जा ग़रीबी, बिजली की भरोसेमंदी, मकान की गुणवत्ता और पानी तक पहुँच तय करती है कि कोई परिवार एक कमरा ठंडा कर भी सकता है या नहीं।

पानी, भोजन और आजीविका

जल-दबाव बच्चों तक सीधे पीने के पानी, स्वच्छता और साफ़-सफ़ाई से पहुँचता है, और अप्रत्यक्ष रूप से खाद्य उत्पादन, घरेलू आमदनी और पानी लाने में लगने वाले घंटों से। उन्नीस देशों के विश्लेषण ने पाया कि लंबी अवधि के तापमान और वर्षा के पैटर्न बच्चों के भोजन की विविधता से जुड़े हैं, साथ ही यह माना कि जलवायु को संपत्ति, बाज़ार और खाद्य व्यवस्थाओं से अलग करना कितना कठिन है। कार्यक्रमों के लिए निहितार्थ सरल है: बाल पोषण को जलवायु-सहिष्णु जल और आजीविका व्यवस्थाओं से अलग नहीं किया जा सकता।

पढ़ाई, आवाजाही और संरक्षण

स्कूल का बाधित होना जलवायु से बचपन तक का सबसे दिखने वाला रास्ता है। यूनिसेफ़ की 2024 की वैश्विक झलक का अनुमान था कि 85 देशों में कम से कम 24.2 करोड़ विद्यार्थियों की पढ़ाई जलवायु घटनाओं से बाधित हुई, जिसमें सबसे बड़ा हिस्सा लू का था; भारत का आँकड़ा 5.478 करोड़ है। ये बाधा गिनते हैं, स्थायी रूप से स्कूल छोड़ना नहीं, और इन्हें हर प्रभावित विद्यार्थी के लिए सीखने की हानि नहीं पढ़ा जाना चाहिए। विस्थापन इसे और बढ़ाता है: 2016 से 2021 के बीच मौसम-संबंधी आपदाओं से जुड़े अनुमानतः 4.31 करोड़ आंतरिक बाल विस्थापन हुए, और बार-बार का विस्थापन नुक़सान को गहरा करता है।

> **मानसिक कल्याण वास्तविक है पर उस पर प्रमाण कम स्थिर है।** जलवायु चिंता, गर्मी से जुड़ी तकलीफ़ और अनिश्चितता युवाओं को प्रभावित करती है, पर स्थानीय अध्ययन अक्सर छोटे या चुने हुए नमूनों पर होते हैं। यह ब्रीफ़ इसे एक प्रासंगिक परिणाम मानता है, बिना कोई सार्वभौमिक प्रभाव-आकार बताए।

खंड 4

युवा केवल पीड़ित नहीं, भागीदार

संवेदनशीलता तस्वीर का एक हिस्सा है और वही हिस्सा सुनाया जाता है। युवाओं के पास स्थानीय जानकारी भी है, वे सेवाओं को सीधे भोगते हैं, और अभी लिए जा रहे फ़ैसलों के साथ सबसे लंबा जिएँगे। भागीदारी मायने रखती है। उसकी गुणवत्ता उसकी दिखावट से कहीं अधिक मायने रखती है।

सेव द चिल्ड्रेन के 2023 के सहभागी शोध ने मिस्र, इराक़, जॉर्डन, लेबनान, मोरक्को, अधिकृत फ़िलिस्तीनी क्षेत्र, सऊदी अरब, ट्यूनीशिया, संयुक्त अरब अमीरात और यमन को शामिल किया, जिसमें प्रतिभागी 8 से 35 वर्ष के थे। इसने पाया कि बच्चों के पास जलवायु निर्णय-प्रक्रिया को प्रभावित करने के सीमित रास्ते हैं, और चेताया कि क्षेत्रीय तथा वैश्विक जलवायु आयोजन दिखावटी भागीदारी पैदा कर सकते हैं, जहाँ युवा ख़ूब दिखते हैं और उनका प्रभाव लगभग शून्य होता है। आयु-सीमा चौड़ी होने का अर्थ है कि इसे केवल बच्चों का प्रमाण नहीं माना जाना चाहिए।

कार्नेगी का 2025 का विश्लेषण उत्तरी अफ़्रीका और आसपास के संदर्भों में युवा वार्ताकार नेटवर्क, जलवायु परिषदें, उद्यमिता और पैरवी दर्ज करता है। औपचारिक भागीदारी स्पष्ट रूप से संभव है। उस तक पहुँच असमान बनी हुई है और राष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थितियों पर बहुत निर्भर है।

तुलनात्मक शांति-निर्माण उदाहरण क्या दिखाते हैं

पीसबिल्डिंग फ़ंड की समीक्षाएँ इस तुलना के बाहर से व्यवहार के उदाहरण जोड़ती हैं। सोमालिया में युवा समूहों ने कबीलाई रेखाओं के आर-पार जाकर नहर-मरम्मत पर काम किया। गाम्बिया में साझा अनुकूलन और प्राकृतिक-संसाधन गतिविधियाँ मूल्यांकनों में समुदायों के बीच बेहतर रिश्तों से जोड़ी गईं। माली में युवा-केंद्रित स्थानीय समूहों ने प्राकृतिक-संसाधन निर्णयों और ग्राम प्रशासन तक रास्ते बनाए।

ये उदाहरण यहाँ क्यों हैं। ये तरीक़े दिखाते हैं: भागीदारी, साझा काम, स्थानीय वैधता, संसाधन-नियम। ये कार्यक्रम-प्रमाण हैं, प्रभाव का सार्वभौमिक प्रमाण नहीं, और यही भेद ईमानदार दावे और बढ़ा-चढ़ाकर किए दावे के बीच का फ़र्क़ है।

अपने सत्र पर लगाने लायक़ कसौटी। उपस्थिति परामर्श नहीं है, और परामर्श प्रभाव नहीं है। अगर युवा कोई विचार रखें और उन्हें कभी पता न चले कि उसका क्या हुआ, तो गतिविधि ने दिखावट पैदा की और कुछ नहीं।

खंड 5

जब विचार बच्चों से मिले तो क्या बदला

दिल्ली की सामुदायिक सीख-बैठकों को इस परियोजना के लिए क्षेत्रीय सीख के रूप में इस्तेमाल किया गया। इन्हें शोध, फ़ोकस ग्रुप या परिणाम-मूल्यांकन के रूप में नहीं बनाया गया था। उद्देश्य अधिक सीमित और अधिक उपयोगी था: यह जानना कि असली सामुदायिक माहौल में बच्चे किन व्याख्याओं और गतिविधियों से सचमुच जुड़ पाते हैं, और उसके नतीजे में सामग्री में क्या बदलना पड़ा।

पहली बैठक में रोटरैक्ट स्वयंसेवकों ने गर्मी, पानी, वायु प्रदूषण और कचरे पर छोटी चर्चाएँ कराईं। बच्चों ने वे व्यावहारिक काम गिनाए जो वे पहले से जानते थे, इससे पहले कि कोई सिखाता: पानी बचाना, प्लास्टिक न जलाना, आसपास साफ़ रखना, कचरे का सही निपटान, कम करना–दोबारा इस्तेमाल–रीसाइकल। अपने मोहल्ले को चित्र में दिखाने वाले अभ्यास ने चर्चा को उस तरह ठोस बनाया जो अकेली चर्चा नहीं कर पाई थी।

दूसरी बैठक एक व्यस्त शहरी बस्ती में हुई जहाँ यातायात के शोर ने लंबी व्याख्या को असंभव बना दिया। बच्चों ने छोटे घर, खुली नालियाँ, मच्छर और दिखता कचरा बनाया। फिर उन्होंने वॉटर टैंक खेला। समूहों ने स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र, परिवारों और किसानों की भूमिकाएँ लीं, और उपलब्ध पानी जानबूझकर कुल माँग से कम रखा गया। हर समूह ने अपनी ज़रूरत बताई, माँग से कम पाया, और बातचीत के लिए दूत भेजे। बाद में बच्चों ने संरक्षण, साझेदारी, दोबारा इस्तेमाल और लोगों की जवाबदेही पर बात की।

सामग्री उन दोपहरों की क्या देनदार है

क्या हुआ	उसकी वजह से क्या बदला
बच्चे व्यावहारिक काम पहले से जानते हुए आए।	जो वे जानते हैं वहीं से शुरू करें, फिर व्यवस्थाओं, असमान प्रभाव और साझा ज़िम्मेदारी की ओर बढ़ें।
शोर ने लंबी व्याख्या असंभव बना दी।	गतिविधियाँ छोटी, अधिक दृश्य और शोरगुल वाले कमरे में चलने लायक़ बनीं।
वॉटर टैंक ने असली बातचीत पैदा की।	इसे ऑफ़लाइन रखा गया। टोकन और आमने-सामने का मोल-भाव ही असल गतिविधि है।
इसे स्क्रीन पर उतारना इसे खोखला कर देता।	ऑनलाइन रास्ता पोल, चैट-वॉटरफ़ॉल और अलग प्राथमिकता-तय करने वाले अभ्यास के इर्द-गिर्द दोबारा बनाया गया।

क्षेत्रीय सीख की सीमा। इन अवलोकनों ने डिज़ाइन के फ़ैसलों को दिशा दी। ये यह नहीं दिखाते कि गतिविधियों ने जलवायु ज्ञान, व्यवहार, सामाजिक जुड़ाव या संघर्ष-समाधान कौशल बेहतर किया। ऐसे किसी दावे के लिए दर्ज मूल्यांकन चाहिए, और कोई नहीं हुआ।

खंड 6 और 7

प्रमाण से दो हैंडबुक तक

साथ की दोनों हैंडबुक एक ही क्रम का पालन करती हैं: ध्यान दो, समझो, अलग नज़र से देखो, मिलकर काम करो, कार्रवाई करो। यह स्थानीय अनुभव से शुरू होता है, जलवायु और व्यवस्थागत सोच लाता है, फिर निष्पक्षता, बातचीत और साझा ज़िम्मेदारी की ओर बढ़ता है। वयस्कों और संस्थाओं की ज़िम्मेदारी पूरे समय दिखती रहती है, ताकि किसी बच्चे को यह न लगे कि घरेलू व्यवहार अकेले ही किसी ढाँचागत समस्या को हल कर देगा।

शिक्षा का साहित्य भी इसी दिशा में इशारा करता है। भारतीय माध्यमिक स्कूल पाठ्यक्रम के 2025 के एक विश्लेषण ने पाया कि पर्यावरण और जलवायु की काफ़ी सामग्री पहले से मौजूद है, और तर्क दिया कि जो कमी है वह और सामग्री नहीं बल्कि शिक्षक-क्षमता, व्यवस्थागत सोच और कार्रवाई-उन्मुख शिक्षण है। हैंडबुक उसी दिशा का पालन करते हुए व्याख्या के साथ मानचित्रण, परिणाम-शृंखला, बातचीत, परिदृश्य-कार्य और स्थानीय समाधान-डिज़ाइन जोड़ती हैं।

संस्थाएँ क्या अलग कर सकती हैं

सरकार और स्थानीय व्यवस्थाएँ	स्कूल, एनजीओ और सामुदायिक संगठन	रोटरी, रोटरैक्ट और युवा संगठन
बच्चों के जोखिम-संपर्क का मानचित्रण पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा, संरक्षण और सामाजिक सुरक्षा की कमियों के साथ करें।	उन स्थानीय परिस्थितियों से शुरू करें जिन्हें बच्चे पहचानते हैं, फिर कारणता को बढ़ा-चढ़ाकर बताए बिना उन्हें जलवायु प्रक्रियाओं से जोड़ें।	युवाओं को एक बार की जागरूकता भागीदारी के बजाय अवलोकन, चर्चा और स्थानीय कार्रवाई में ढाँचागत भूमिकाएँ दें।
गर्मी, बाढ़ और विस्थापन की घटनाओं में पढ़ाई, पानी, स्वास्थ्य देखभाल और बाल संरक्षण की निरंतरता बचाएँ।	ग़रीबी, विस्थापन, बीमारी या असमान पहुँच पर बात करते समय काल्पनिक पात्र इस्तेमाल करें, ताकि किसी बच्चे को अलग से चिह्नित न किया जाए।	सुनने, असहमति, संसाधनों के निष्पक्ष बँटवारे और संघर्ष-संवेदनशीलता में फ़ैसिलिटेशन कौशल बनाएँ।
अनुकूलन के नियम बँटवारे पर ध्यान देकर बनाएँ: पहुँच किसे मिलती है, लागत कौन उठाता है, और किसी फ़ैसले को कौन चुनौती दे सकता है।	यह देखते रहें कि कौन भाग ले रहा है और कौन छूट रहा है, जिसमें छोटे बच्चे और दिव्यांग बच्चे शामिल हैं।	युवाओं के विचारों को उन लोगों से जोड़ें जो मंज़ूरी दे सकें, पैसा दे सकें या लागू कर सकें, और बताएँ कि आगे क्या हुआ।
जहाँ ज़मीन, पानी, आजीविका या सेवाएँ पहले से विवादित हों, वहाँ जलवायु और शांति विश्लेषण साथ इस्तेमाल करें।	जलवायु ख़तरों को सामान्य पर्यावरणीय या सेवा-संबंधी समस्याओं से अलग रखें। बंद नाली अपने आप जलवायु परिवर्तन नहीं है।	स्कूलों, एनजीओ, स्थानीय सरकार और सेवा प्रदाताओं के साथ काम करें ताकि ज़िम्मेदारी सचमुच साझा हो।

खंड 8

2026 की खिड़की

COP31 9 से 20 नवंबर 2026 तक तुर्किये के अंताल्या में हो रहा है, ऐसे समय पर जब क्रियान्वयन, अनुकूलन और जलवायु वित्त पर लगातार ध्यान है। यहाँ प्रासंगिकता प्रतीकात्मक नहीं, व्यावहारिक है। बच्चों के प्रति संवेदनशील अनुकूलन के लिए चलते हुए स्कूल, जल व्यवस्थाएँ, स्वास्थ्य सेवाएँ, सामाजिक सुरक्षा और युवाओं के लिए निर्णयों में भाग लेने के रास्ते चाहिए। COP31 के सार्वजनिक कार्यक्रम में युवा, शिक्षा और समावेशी विकास के विषय शामिल हैं, जिससे जलवायु क्रियान्वयन को उन रोज़मर्रा की व्यवस्थाओं से जोड़ने की जगह बनती है जो तय करती हैं कि कोई बच्चा लू झेल पाएगा या नहीं।

एक तारीख़ जानने लायक़। विश्व बाल दिवस 20 नवंबर को पड़ता है, जो COP31 का समापन दिन है। किसी बच्चा-केंद्रित जलवायु पहल को इससे साफ़ मेल नहीं मिलेगा, और यही वजह है कि यह सामग्री अगले साल नहीं, अभी मौजूद है।

प्रमाण की वे सीमाएँ जो दिखती रहनी चाहिए

ये सीमाएँ निष्कर्षों के बाद नहीं, उनके साथ आती हैं। इनमें से हर एक ऐसी किसी बात पर रोक लगाती है जिसका दावा कोई फ़ैसिलिटेटर या साझेदार संस्था अन्यथा करने को ललचा सकती है।

- कई मुख्य आँकड़े मॉडल-आधारित जोखिम-संपर्क के अनुमान हैं। वे बताते हैं कि संयुक्त जोखिम के नीचे कौन रहता है, यह नहीं कि किसे मापी जा सकने वाली हानि हुई।
- भारत के पास उपयोगी राष्ट्रीय मॉडलिंग और कुछ विस्तृत स्थानीय निगरानी है, पर सूक्ष्म स्तर का प्रमाण भौगोलिक रूप से असमान है। उत्तर भारत के शहरी अध्ययन राष्ट्रीय औसत नहीं हैं।
- मध्य पूर्व और उत्तरी अफ़्रीका का प्रमाण अक्सर क्षेत्रीय सूचकांकों और थोड़े से देश-अध्ययनों पर टिका है। संघर्ष, आय, बुनियादी ढाँचे और प्रशासन में राष्ट्रीय भेद बड़े हैं।
- जलवायु और संघर्ष के रास्ते मध्यस्थ कारकों से होकर जाते हैं। हिंसा, चरमपंथ या भर्ती के दावों के लिए अलग प्रमाण चाहिए और उन्हें जलवायु जोखिम-संपर्क से नहीं निकाला जा सकता।
- पर्यावरणीय शांति-निर्माण में कार्यक्रम मूल्यांकन संभव तरीक़े और स्थानीय परिणाम दिखाते हैं। शांति-प्रभावों का दीर्घकालिक स्वतंत्र मापन सीमित बना हुआ है।
- दिव्यांगता, आयु, लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और विस्थापन की स्थिति उपलब्ध प्रमाणों में एक जैसे ढंग से अलग-अलग नहीं दी गई हैं।
- भागीदारी के अध्ययनों को उपस्थिति और परामर्श को वास्तविक प्रभाव से अलग करना चाहिए।

यह हमें कहाँ छोड़ता है

निष्कर्ष

भारत और मध्य पूर्व तथा उत्तरी अफ़्रीका में बच्चे पहले से ही ऐसे जलवायु दबावों के साथ जी रहे हैं जो स्वास्थ्य, पढ़ाई, पानी, भोजन, आवाजाही और घरेलू सुरक्षा को प्रभावित करते हैं। उन प्रभावों की तीव्रता ख़तरे से कहीं अधिक पर निर्भर है। सार्वजनिक सेवाएँ, आमदनी, आवास, विस्थापन, सामाजिक सुरक्षा और प्रशासन तय करते हैं कि कौन झेल पाएगा और कौन नहीं।

शांति-निर्माण का नज़रिया एक दूसरा सवाल जोड़ता है: कठिन जलवायु और संसाधन-फ़ैसले कैसे लिए जाते हैं? जहाँ नियम अन्यायपूर्ण दिखते हैं, सेवाएँ तनाव में हैं और भरोसा कम है, वहाँ पर्यावरणीय दबाव मौजूदा तनाव में जुड़ सकता है। जहाँ लोग फ़ैसलों में भाग ले सकते हैं, प्रतिस्पर्धी ज़रूरतों पर बातचीत कर सकते हैं और साझा पर्यावरणीय समस्याओं पर काम कर सकते हैं, वहाँ अनुकूलन सहयोग की जगह भी बना सकता है। प्रमाण दोनों संभावनाओं का समर्थन करते हैं; कौन-सा रास्ता अधिक संभावित होगा, यह संदर्भ तय करता है।

बच्चों और युवाओं के साथ काम करने वाली संस्थाओं के लिए व्यावहारिक काम है संरक्षण को भागीदारी से जोड़ना।

> यही इस ब्रीफ़ और साथ की दो हैंडबुक के बीच की कड़ी है। बच्चों को अधिक सुरक्षित सेवाएँ और जलवायु-सहिष्णु व्यवस्थाएँ चाहिए। उन्हें यह समझने के मौक़े भी चाहिए कि क्या बदल रहा है, यह देखने के कि प्रभाव कैसे अलग-अलग होते हैं, निष्पक्ष समस्या-समाधान का अभ्यास करने के, और उचित स्तर पर फ़ैसलों को प्रभावित करने के।

चुनिंदा संदर्भ

UNICEF (2026) Children's Climate Risk Report 2026 • Pandey, K. (2026) Down To Earth • Jha, K. et al. (2024) ICLEI South Asia • Pandey & Sengupta (2024) Centre for Science and Environment • UNICEF (2021) Running Dry • UNICEF (2023) Growing up in a changing climate • UNICEF (2025) global education snapshot • Thalib & Al-Taiar (2012) Science of the Total Environment • Hlasny, V. et al. (2026) • Niles, M. et al. (2021) • Fadulelsied, A. et al. (2019) • Weathering Risk & European Institute of Peace (2026) • FBA, UNDP & SIPRI (2024) • Gaston, E. (2025) UNU Centre for Policy Research • Save the Children (2023) • Yerkes & Uakkas (2025) Carnegie Endowment • Singh & Ahmad (2025) • Amir-ud-Din, R. et al. (2026) • United Nations (2015) 2030 Agenda • COP31 Türkiye (2026) • UNFCCC (2026) • Practical Action (2026).

DOI और लिंक सहित पूरे उद्धरण स्रोत ब्रीफ़ में हैं। देश, विषय और स्थिति के अनुसार छाने जा सकने वाले लगभग 305 स्रोतों की व्यापक लाइब्रेरी climateactionheroes.org पर है।

उद्धरण इस तरह दें: Ghosh, A. (2026). Climate, Children and Peace: understanding climate change through a child-centred peacebuilding lens, India and MENA. Rotary Peace Fellowship Social Change Initiative, Otto & Fran Walter Rotary Peace Center, Bahçeşehir University, Istanbul.